हुस्नबानो की डायरी की संवेदना एवं भाषा

सत्यनारायण,
हिसार हरीयाणा

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है, ''यदि गद्य कवियों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है।'' रामबिलास शर्मा व्यंग्य को ''गद्य का कवित्व'' कहते हैं। हरिशंकर परसाई जी का नाम व्यंग्य का पर्याय माना जाता है। परसाई का जन्म 22 अगस्त 1922 को हुआ था। परन्तु इनके साहित्य में भारतेंदु युगीन व्यक्तिगत निबंध की व्यापकता, स्वच्छंदता और द्विवेदी जी के खुलेपन के दर्शन होते हैं। कथात्मक विलक्षणता, तीक्ष्ण वैचारिक शक्ति इन्हें व्यंग्य शब्द का पर्यायवाची बना देती है। यह तीक्ष्णता पाठक को इस तरह प्रभावित करती है कि पाठक भाव विभोर हो जाता है। ''चंद शाब्दिक रेखाओं से वे भरा पूरा चित्र प्रस्तुत कर देते हैं। यह चित्र इतना गतिशील हो जाता है कि उसमें प्राणों का संचार प्रतीत होने लगता है।'' [1] यह लेखक की भाषाई पकड़ का परिणाम है। हुस्नबानों की डायरी में लेखक हरिशंकर परसाई ने बड़ी विलक्षण भाषाई पकड़ प्रतिभा का परिचय दिया है। यहाँ लेखक की रचना पद्धति अलग है परन्तु उनका भाषाई रूप यथार्थ की परिणिति चित्रित करता नजर आता है। ''वे उसी जोर से संस्मरण सुनाते गए। हमने बीच में हूं –हा करना बन्द कर दिया, पर हातिम भाई, हम में से किसी एक पर नजरें गडा कर कह उठते सुना तुमने मुनरीशामी, सुना तुने हुस्नबानों, और हमें मजबूरन हूं–हा करना पड़ता। हमारी बुरी हालत थी। इन परोपकारी आदमियों से भगवान बचाए। जो करेंगे उसका दस बार सुनाएंगे। हम तो बड़े परेशान हैं।''[2] यह समाज के उस चरित्र का वर्णन उसी की भाषा में किया है, सुनना जिसके जीवन में अभिशाप के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। हुस्नबानों और मुनरीशामी दोनों ऐसे ही सामाजिक चरित्र है। इतना ही नहीं अब जो मुनरीशामी ने हुस्नबानों से निकाह भी कर लिया तो, वे अभी भी सुखी नहीं है। परन्तु यह कहानी का अंत भी तो नहीं है। ''हद हो गई। हमसे रोज रोज बोर नहीं हुआ जाता, नहीं हुआ जाता जी। मैं तो कहती हूं कि हातिम भाई ने साफ कह देना चाहिए कि अब किस्से सुनने का समय नहीं है। परन्तु यह उनको बुरा लग जाएगा।''[3] समाज का यह वर्ग उस संवेदना का द्योतन करता जो समाज में अपने कर्तव्य और अपनेपन की रस्सी से जकड़ा हुआ जीवन की गतिशीलता के बारे में सोच भी नहीं सकता। जीवन के उद्देश्य न होकर कर्त्तव्य उनका उद्देश्य होता है।

अजीब आदमी है और अजीब उसकी आदमीयत। यह तो अपने मन को खाली करने के लिए दूसरे के मन को भरन के लिए अपनी रातों की नींद तक को दाव पर लगा देता है। ''हाँ एक बार तो बड़े मन की बात हुई मैं दरिया किनारे खड़ा था। भूख से जान निकल रही थी। सोचता था कि मैं भूख से यहीं मर जाऊंगा। इतने में मैं क्या देखता हूं कि एक नाव चली आ रही है। जिसमें गोश्त और रोटी रखे हैं।''[4] हुस्नबानों परेशान भी और दुःखी भी। वह भाईचारे और कर्त्तव्य के बीच जूझ रही है।

उसका हाल बेहाल है। वह बहुत बार इस किस्से को सुन चुकी है परन्तु कह नहीं पाती। वह मन ही मन बुदबुदाती है, ''ओफ्फोह, हम उनसे कैसे कह दें कि यह किस्सा हम पाँच बार सुन चुके हैं।''[5] उसे हातिम का फ्रिक है। वह उसका मुहबोला भाई है। वह उसकी भावनाओं पर कुठाराघात नहीं करना चाहती परन्तु दुःखी तो है। वह मुनरीशामी जो उसका शौहर है से बात कहती है तो वे साफ–साफ कह देते हैं, ''न तुम शादी के लिए सात कठिन सवाल रखती और न मैं हातिम की मदद लेता और न आज इस तरह बोर होता।''[6] हुस्नबानों की दूसरी संवेदना उसके अपने पति मुनरीशामी को लेकर है। हातिम रात भर उनके पास बैठकर उनके सात कठिन सवालों के जवाबों में अपने संस्मरण सुनाते हैं, ''मैं पिछली रात में एक सपना देखकर चीख पड़ी, इन्होंने पूछा क्या बात है? तुम्हारे दोस्त के मारे न दिन चैन न रात चैन। सपने भी अब वही आते।''[7] इनको मेरी चिंता है। इसलिए तो मेरे सात कठिन सवालों के लिए उत्तर खोजने का सहारा लेते हैं। परन्तु अब पति को कैसे कहूं जब मैं ही गलत थी। यह संवाद हुस्नबानो ने अपनी डायरी में लिखा है जो नारी हृदय की कोमलता का पुख्ता उदाहरण है। यह हमें बताता है कि हुस्नबानों का हृदय कूट–कूट कर संवेदनाओं से भरा हुआ है। शुरूआत में मैंने भाषा की बात की थी। साहित्य का आदमी होने के नाते यह समझ तो अवश्य है कि संवेदना और भाषा का मेल आवश्य है फिर भी दोनों अलग–अलग है। भाषा संवेदना को स्वरूप देती है। इसलिए भाषा को प्राथमिकता देना किसी भी साहित्यकार का दायित्व बन जाता है। हरिशंकर परसाई जी ने यही किया। हरिशंकर परसाई जी ने यही किया। उनको हुस्नबानों की डायरी जब मिली तो, उसकी हालत बहुत खराब थी। कुछ पन्ने और कुछ शब्द डायरी से गायब थे। बड़ी मेहनत से परसाई जी ने हुस्नबानों के शब्दों में शब्द मिलाकार उसको साहित्य में जोड़ा और इसके लिए उन्होंने हुस्नबानों वाली संवेदना को व्यक्त करने वाली हुस्नबानों की शब्दावली का चयन किया।

स्वंय हुस्नबानों ने अपनी डायरी में लिखा है, ''आगे के पन्नों को कोई न पढ़े, ये कभी प्रकाशित न हो। वरना जरूरतमंद किसी की मदद लेता डरेगा और उपकारी किसी की मदद करने से हिचकेगा।''[8]

कहना संगत रहेगा कि हुस्नबानों की तिलिस्म में रूचि बचपन से रही है। वह जानना चाहती है प्रत्येक उस रहस्य को जो उसके मन में है और जो उसने सुना है। यह भी हुस्नबानों की डायरी की संवेदना है कि वह शादी के लिए इन्हीं जिज्ञासाओं को सवाल के रूप में हुनरीशामी के समक्ष रखती है। उसके सपने भी इसी जिज्ञासा का प्रतिफलन रहे है, ''कहना संगत रहेगा कि काल्पनिक बाते हुस्नबानों के हृदय का गहना है क्योंकि वह बहुत भोली और मासूम है, इस चतुर एवं मायावयी जगत से उसका परिचय नहीं है। यदि ऐसा होता तो वह काल्पिनिक एवं मायावयी तिलिस्म से बाहर ही आ गई होती, वह शादी भी कर चुकी है। यह भी हुस्नबानों की डायरी का एक संवेदना है कि वह पर्यटन एवं प्रकृति में बहुत विश्वास रखती। हातिम भाई को सुनना उसकी विवशता के साथ जिज्ञास में प्रणीत हो जाती है तब हातिम उसको अपने संस्मरण सुनाता है। ''आज ये दफ्तर नहीं गए। दोपहर में हातिम आए। पुकारा मुनरीशामी है क्या? इन्होंने जवाब दिया, हाँ हूँ हातिम भाई आइए वे आकर बैठ गए।''[9] हुस्नबानों की निगाह अपने काम पर थी और कान हातिम भाई की बात पर। हातिम भाई समाज का वह चरित्र है जो समाज की

परेशानी मिटाने का जज्बा लिए है। वह अपनी ओर से परेशानी मिटाने का पूरा प्रयास करता है चाहे उसका प्रयास उसकी परेशानी को और अधिक बढ़ा दे। हातिम भाई मुनरीशामी के सात सवालों का जवाब देते–देते यह भूल गए कि अब इन दोनों ने शादी कर ली, सवालों का सम्बन्ध केवल शादी की रस्म तक की सीमित था। अब इन बेतुके सवालों का कोइ अर्थ नहीं रह गया। यह भोला मासूम हातिम का चरित्र चित्रण भी इस हुस्नबानों की डायरी की संवेदना है। मजबूरन मुनरीशामी ने हातिम से छुटकारा पाने की योजना बना ली और इस योजना में उसने चौदह सवाल कागज पर लिखकर हातिम को इनका जवाब खोहने के लिए दूर भेज दिया।

हुस्नबानों अपनी डायरी में लिखती है, ''आज हमने बड़ी देर तक सलाह की, इनका (मुनरीशामी) कहना था कि अगर हातिम को किसी काम में फसा दिया जाए जो पिंड छूट सकता है। इनके मन एक योजना है, मुझे बताई है, इन्होंने सात के दोगुने चौदह सवालों को कागज पर लिख लिया है और इन सवालों के जवाब खोजने हातिम को दूर भेज देंगे।''[10] यह एक और संवेदना हैं, यहाँ कड़वा बोल कर हातिम का दिल नहीं तोड़ना केवल उसको व्यस्त कर उससे पीछा छुड़वाना है।

कुल मिलाकर यहाँ एक बात उभर कर सामने आयी है कि परसाई जी ने हुस्नबानों की डायरी को पाठक तक पहुँचाने का महत्वूपर्ण कार्य किया है और उन संवेदनाओं को बड़ी बारीकी से उकेरा है जो डायरी के शब्दों में अर्न्तनिहित रही है।

कोई भी प्राणी अपनी प्रकृति नहीं त्याग सकता। यह बात साहित्य जगत में भी लागू होती। परसाई जी मूलतः व्यंग्यकार है और व्यंग्यकार की सबसे बड़ी मौलिकता उसकी भाषाई पकड़ के रूप में होती है। यहाँ भाषाई जादू देखते ही बनता, ''मैं बड़ी परेशानी में थी। इन बातों का क्या जवाब दूं। मैंने जरा खीझकर कहा, हातिम भाई मुझे किसी चीज की जरूरत होगी तो पहले उनसे कहूंगी, आप क्यों चिंता करते है।''[11] यह निश्चय भाषा और व्यंग्य की संवेदना का अद्भुत नमूना है। परसाई जी की एक अन्यत्र विशेषता यह है कि वे अलग–अलग रचनाओं में ही नहीं एक ही रचना में भी अलग–अलग भाषाओं का प्रयोग करते देखे गए हैं। यह सब उनकी उद्देश्य की पूर्ति का प्रतिफलन है।

संदर्भ सूची

1. हरिशंकर परसाई संकलित रचनाएं, श्याम कश्यप भूमिका से
2. हुस्नबानों की डायरी : हरिशंकर परसाई पृष्ठ–02
3. वही
4. वही पृष्ठ–06
5. वही पृष्ठ–07
6. वही पृष्ठ–09
7. वही पृष्ठ–01
8. वही पृष्ठ–11
9. वही पृष्ठ–08
10. वही पृष्ठ–13
11. वही पृष्ठ–12